



DR. JAGADISH CHANDRA HALDER

Dr. Jagadish Chandra Halder is a reputed doctor known for social service, voluntary works and service to the poor. He wrote books on different topics to expose the facts happening in the society.

2. Born on the 13th June 1948, Dr. Halder graduated in Medical Science obtaining MBBS Degree from Dhaka Medical College in 1972. In the subsequent period, he obtained DCP (Cal), MSC (DFSM), FCD (Fellow Certificate in Diabetes Mellitus, Chennai). He served in West Bengal Health Scheme (WBHS) and retired in 2008.

3. Dr. Halder is engaged in voluntary service to different institutions such as Belur Shramajibi Hospital, Howrah and Sunderban Shramajibi Swasthya Prokalpa, Sarberia, 24 Parganas (North), West Bengal. He engaged in research work on Covid-19 Virus. He discovered the "Theory of Quantum Competitive Surge" to defeat Covid-19. The thesis was placed on "Prime Minister Portal", New Delhi for evaluation.

4. Dr. Halder authored many books such as 'Historicism of MATUA Dharma and Spiritualism'; 'Marichjhapi ganahattya O Jyoti Basu', "A Manastattik Paryalochana"; 'Prosanga Bangladesh', "Hindu, Buddhist and Christain Hattyar Dalit"; Jihadi Islami Terror Operation in Bangladesh and India on Citizenship Amendment Act (CAA) and National Register of Citizens (NRC), an analytic book.

5. Dr. Halder all along fought the cause of Refugees. On 25th October, 2016 he delivered a speech at the Joint Parliamentary Committee (JPC), New Delhi on the subject 'Citizenship Award to the Refugees'. He is engaged in Matua movement, its development and expansion of its literary works.

6. Dr. Halder is the recipient of numerous Awards and honors. He received Mother Teresa International Award as Best Social Worker in 2015 and Ambedkar Mission Award, Calcutta University.



डॉ. जगदीश चन्द्र हालदार

डॉ. जगदीश चन्द्र हालदार एक प्रतिष्ठित चिकित्सक हैं जो समाज सेवा, परोपकार और गरीबों की सेवा के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने समाज की मौजूदा सच्चाई को उजागर करने के लिए विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखी हैं।

2. 13 जून, 1948 को जन्मे, डॉ. हालदार वर्ष 1972 में ढाका मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त करके चिकित्सा विज्ञान में स्नातक बने। बाद में, उन्होंने डीसीपी (कैल), एमएससी (डीएफएसएम), एफसीडी (फेलो सर्टिफिकेट इन डायबिटीज मेलिटस, चेन्नै)) प्राप्त किया। उन्होंने पश्चिम बंगाल स्वास्थ्य योजना (डब्ल्यूबीएचएस) में नौकरी की और वर्ष 2008 में सेवानिवृत्त हुए।

3. डॉ. हालदार बेलूर श्रमजीवी अस्पताल, हावड़ा और सुंदरबन श्रमजीवी स्वास्थ्य प्रोकल्प, सरबेरिया, 24 परगना (उत्तर), पश्चिम बंगाल जैसे विभिन्न संस्थानों में स्वैच्छिक सेवा कार्य में लगे हुए हैं। उन्होंने कोविड-19 वायरस पर शोध कार्य किया। उन्होंने कोविड-19 को हराने के लिए "थ्योरी ऑफ क्वांटम कंपीटिटिव सर्ज" की खोज की थी। इस थीसिस को मूल्यांकन के लिए "प्रधान मंत्री पोर्टल", नई दिल्ली पर डाला गया था।

4. डॉ. हालदार ने कई पुस्तकें जैसे 'हिस्टरीसिज्म ऑफ मतुआ धर्म एंड स्प्रीचुअलिज्म', 'मरीचझपी गणहत्या ओ ज्योति बसु', "एक मनस्ततिक पर्यालोचना"; 'प्रोसंगा बांग्लादेश', "हिंदू बुद्धिस्ट एंड क्रिश्चियन हत्तियार दलित", 'जिहादी इस्लामी टेरर ऑपरेशन इन बांग्लादेश तथा इंडिया ऑन सिटीजनशिप एक्ट (सीएए)' और एक विश्लेषणात्मक पुस्तक, 'नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजंस (एनआरसी)' लिखी हैं।

5. डॉ. हालदार ने शरणार्थियों के लिए हमेशा संघर्ष किया। उन्होंने 25 अक्टूबर, 2016 को, नई दिल्ली में संयुक्त संसदीय समिति के सम्मुख 'शरणार्थियों को नागरिकता' विषय पर भाषण दिया। वह मतुआ आंदोलन, इसके विकास और साहित्यिक कार्यों के विस्तार में लगे हुए हैं।

6. डॉ. हालदार को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। उन्हें वर्ष 2015 में सर्वश्रेष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में मदर टेरेसा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार और कलकत्ता विश्वविद्यालय का अंबेडकर मिशन पुरस्कार प्राप्त हुआ।